1st semester

LCC1 paper 1

कबीर के रामका स्वरूप अथवा कबीरकी भक्ति

कबीर की रचना ‘बीजक’ मे सङ्कलित साखी सबदी और रमैणी इसके तीन भाग है । कबीर निर्गुण सन्त परम्पराके प्रतीनिधी कवि है । कबीर एक भक्त और समाज चेता कवि है । उनकी भक्ति निर्गुण निराकार की भक्ति है । वे भक्ति मार्गमे जनसाधरण के लिए एक सहज मार्ग सुझाते है जो सहज जीवनका अङ्ग है जिसके लिए न मन्दिर की आवश्यकता है, न मस्जिद की, न पण्डित की आवश्यकता है न मुल्ला की । कबीर की भक्ति प्रत्येक व्यक्तिको संयम सदाचार आडाम्बरहीन जीवन और सत्कर्म से प्राप्त हो सक्ता है । कबीर के आरध्य सबके ह्रदयमे व्याप्त है , उसके दर्शन के लिए किसी मंदिर या मस्जिदमे जाने की आवश्यकता नही । वह सहज और सुलभ है ।

कबीर की भक्ति का आलम्बन है राम । उनके राम दशरत सुत राम नही है । उनके राम समस्त वेदो और भेदो से अतीत , पाप पुण्य से परे ज्ञान और ध्यान का विषय नही है वह स्थूल और सूक्ष्म से ऊपर, रूप से अत्यन्त अनुपम, त्रिलोक से विलक्षण परम तत्व है ।

कबीर अद्वैतवादी है । वे आत्मा और परमात्मा के वीच कोइ भेद स्वीकार नही करते ।

कबीर अपने आराध्य को कभी राम, कभी हरि, कभी माधव जैसे सम्वोधन करते है । जो जनमन मे प्रचलित साकार स्वरूप की उपासना और प्रभाव है, जो ईश्वरका सांस्कृतिक बिम्ब मात्र है । कबीर मूलत भक्त है । ईश्वर के प्रति उनकी भावना अनुभव पर आधारित है । भक्ति साधना मे उन्हे व्रम्हका जिस जिस रूपमे साक्षात्कार होता गया उसका वे उसी रूपमे वर्णन करते गए । व्रम्ह के लिए उन्होने ‘राम’ शब्दका प्रयोग किया इसके पीछे उनका लक्ष्य अपने व्रम्हको , राम को भक्तिका आलम्बन बनाना था । कबीर ईश्वर के सगुण रूपकी चर्चा अपने निर्गुण निराकार परम तत्वके लिए करते है अनन्त है जिसके नाम , अपरम्पार है जिसका स्वरूप ।

रामसे कबीरका आशय सत्व रज और तम गुणो से रहित तत्व से है । कबीर के ईश्वर प्रेम से प्राप्त अनुभूतिका विषय है जो सहज भावसे सुलभ है । कबीर ने नवधा भक्तिको स्वीकारा है ।

कबीर जानते थे उस असीम को ससीम उपकरणो मे बाँधकर व्यक्त नही किया जा सकता ।

कबीर मे अपने युग की नब्जको टटोलकर लोक जीवनमे स्वीकृत सगुण और निर्गुण समन्वित व्रम्ह के स्वरूप को अपनाया । वे अपने राम माध्यमसे लोक जीवनकी अस्मिता की पहचान करा रहे थे ।

कबीर को ऐसे ईश्वर की आवश्यकता थी जो दूर खडी दो विरोधी संस्कृतियो को पास लाता । जो किसी मन्दिर मस्जिदमे न रहकर प्रत्येक मनुष्य के ह्रदय मे निवास करते है । अपने रामके सन्दर्भमे व कहते है –

“ जाके मुँह माथा नही , नाही रूप कुरूप ।

पहुप बास थैं पातरा, ऐसा तत्व अनूप ।।

जिसकी भक्ति वे अन्तरात्मा से करते है –

पूजा करू न निमाज गुजारूँ,

एक निराकार ह्रदय नमस्कारूँ ।।

AECC 2 SEMESTER 2

समास

परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो से अधिक शब्दो से मिलकर जब स्वतंत्र शब्द बनते है, तो इस मेल को समास कहेते है । समास में परस्पर सम्बन्ध रखने वाली विभक्तियों अथवा शब्दों का लोप हो जाता है । इस प्रकार दो या दो से अधिक पदों के योग को समास कहेते है ।

समास के छ भेद है –

1. अव्ययी भाव समास- अव्ययी भाव समास वह है, जिसमें पहला खण्ड प्रधान हो । अव्ययीभाव समास में विग्रह अव्यय के साथ न होकर उसके अर्थ से होता है ।

उदाहरण- शक्ति के अनुसार- यथाश्कति

 एक एक करके- प्रत्येक

 हर एक माह- प्रतिमाह

1. तत्पुरूष समास इस समास का दूरसरा पद प्रधान होता है । पुरे समास का तात्पर्य दूसरे पद से ही होता है ।

उदाहरण- हस्त के द्वारा लिखित- हस्तलिखित

 धर्म के लिए शाला – धर्मशाला

 पथ से भ्रष्ट- पथभ्रष्ट

 राजा का पुत्र-राजपुत्र

1. द्वन्द समास- वह समास है, जिसमे सबखण्ड प्रधान होते है । इस समास की सरल पहचान यह है कि विग्रह करते समय और, या, अथवा शब्द आता है ।

उदाहरण- माता और पिता- माता पिता

 रात और दिन- रात दिन

1. कर्मधारय समास- जिस समास में विशेष्य विशेषण या उपमान उपमेय का परस्पर मेल हो उसे कर्मधारय समास कहेते है ।

उदाहरण- चन्द्रवदन( चन्द्रमा के समान वदन) नीलकमल (कमल जैसा नीला) घनश्याम (बादलो जैसा लीला ) चरणकमल( कमल से समान चरण )

1. द्विगु समास- जिस समास मे पूर्व पद संख्यावाचक हो या जिससे समूह का ज्ञान हो , उस समास को द्विगु समास कहेते है ।

उदाहरण- त्रिलोकी( तीनो लोको का समूह )

 चतुर्युग- ( चारो युगों का समूह)

 चौमासा ( चार मासों का समूह)

1. बहुब्रीही- इस समास में अन्य पद प्रधान होता है । दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद का तात्पर्य बताते है-

उदाहरण- दस हैं मुख जिसके अर्थात् रावण, पीत है अम्बर जिसके पीताम्बर अर्थात् विष्णु ।

DSC 2A

2ND SEMESTER

भूषणकी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना

भूषण रीतिकाल के कवि है । यह काल राजनीतिक , सांस्कृतिक समाजिक कई दृष्टियो से उथलपुथलका था अर्थात् कवि आश्रय दाताकी प्रशंसाकर उनकी काम भावनाऔको उदृत करनेमे लीन थे । औरगंजेब की असहिस्नुता साम्प्रादायिक कटरता धार्मिक संकीर्णता कहर ढारहे थे । उसका विरोध करने का सहास कीसी मे नही था । देशी रियासत छोटे वडे राज्य में बटे थे उनके साशक विलास मे लीन थे । वे युगकी विभिषिका और विडम्वना को देख ररहे थे । उनके लिए कला प्रियाता विनोद प्रियता अवसर वादीता भोग विलासी इस युगकी जीवन मूल्य बन चुके थे । वास्तविक जीवन मूल्य लुप्त हो चुके थे । कवि धन लोलुप हो गए थे । सत्ता और धन से समाजमे प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे थे । वे अपने समयके राजनैतिक सांस्कृतिक ह्राससे समाज जागरण वजह राजाओकी काम भावना उधृत करने मे मग्न थे । वे भोग विलासको बडावा दे रहे थे । राधा कृष्ण राम सीता उनके शृंगार काव्यके नायक नायिका बन गए थे । यह थी भूषण के काव्य की पृष्ठभूमि भूषण ने धार्मिक विभिषिका आर्थिक खस्ताहाली अपने इतिहास कविता और यथार्थका संगम कर युगकी वाणी के मुखर बनाना उनका मुख्य उद्देश्य था ।

इसी उद्देश्यके लिए भूषण ने काव्य की रचना की उनका जन्म कानपूर के तिक्वापूर मे हुवा । मतिराम और चिन्तामणि उनके बडे भाई थे जो रीतिकाल के प्रमुख कवि थे। भूषण आश्रयदाता के खोज मे थे चाटुकारिता के उस युग मे वे शिवाजी के स्वाभिमान से प्रभावित हुवे वे छत्रपति शिवाजी और बुंदेलखण्ड के नरेश छत्रसाल के दरवारी कवि थे। युग के लिए आवश्यक नविन राष्ट्रिय चेतना को उन्होने अपने काव्यमे स्थान दिया।

 अलंकार विवेचन के लिए शिवाजीको अपने ग्रन्थका नायक बनाया शिवबावनी उनकी रचना हे। काव्य रस मे अपने युग के बाड श्रंगार रसको छोडकर युगनायक की विरोचित कार्यप्रणाली के अनुरूप वीररस को अपने काव्यका आधार बनाया। घोर श्रंगार के युगमे वीर रसका वर्णन करना साहसिक कार्य था।

 भूषण के समय मे राष्ट्र कि अवधारणा आज के अर्थ मे प्रचलित नही थी।भारत मे मौर्यकाल के पश्चात राष्ट्रका कोई रूप स्पष्ट नही था। पुरा देश छोटी छोटी रियासतो मे बंटा था।

 भूषण एक राष्ट्र का सपना देखते थे और शिवाजीको उसके शासक के रूपमे देखते थे। वे शिवाजीको कभि नृसिंह, कभि कृष्ण से तुलना करते थे और शिवाजीको सांस्कृतिक रक्षक बताते है। वे शिवाजी को युद्धवीर, दानवीर, कर्मवीर बताते है। युद्धवीरता का ओजपूर्ण वर्णन कर राष्ट्र और राष्ट्रियता कि भावना जगाते है।

 भूषण शिवाजी कि दरवार मे कविकुल सचिव थे। उनके काव्य मे रीतिकालिन काव्य कि विशेषताय तो थी हि युग के अनुरूप उन्होने अलंकार योजना कि काव्यशास्त्र कि विवेचना कि और लक्षणग्रन्थ लिखे। उनका काव्य राष्ट्रिय चेतना को भी जगाने मे साहयक है।

 मुगलों कि सत्ता कि खिलाफ खडे होने वाले शिवाजीको अपने काव्य का नायक बनाया। राष्ट्रियता के अलख जगाया लोक रक्षक रूपका प्रचार प्रसार भूषण ने अपने काव्य मे किया। राष्ट्रियता के भाव जगाने के लिए रस, शैली, अलंकार सभी साधनोका प्रयोग कर छत्रसाल और शिवाजी कि विरता का वर्णन किया। राष्ट्रिय चेतना युक्त साहित्य मे अपनी धर्म और संस्कृति से प्रेरणा ग्रहण कि उनके राष्ट्रवाद को हिन्दू राष्ट्रवाद कहा जाता है पर भूषण मुगलो के विरोधी नही थे। मुगलो के अत्यचार के विरूद्ध थे मंगलाचरण भी विर रस के अनुकुल है। वह अपने काव्य मे वर्णन करते है कि शिवाजी राम कृष्ण और नृसिंह कि तरह है।धर्म मन्दिर छत्रपति के कारण ही बच पाए, राजाओं और सिपाहियो की रक्षा हो पाई। भूषण ने इस्लाम का विरोध कहीं नही किया वे धार्मिक सद्भाव के पक्षधर थे।वे बाबर अकबर को महान मानते थे पर औरंगजेब की आलोचना करते है।

 भूषण की महत्ता एकात्मकता के कवि के रूप मे हे। उने सांस्कृतिक चेतना साम्प्रदायिकता के कठघरे से निकलकर साम्प्रदायिक सद्भावना और राष्ट्रिय चेतना के कवि के रूप मे उनका पुर्नमूल्यांकन किया जाना चाहिए।

***हिन्दी मे मुक्त छन्द के प्रवर्तक निराला***

काव्य के रूपों और अभिव्यक्ति की विभिन्न प्रणालियो के साथसाथ छायावादी युग में कविता के छन्द और लय में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए है अत निराला की कविता के कलापक्ष पर विचार करते समय अब दिशा में उनका क्रान्तिकारी स्वरूप अधिक प्रकट हुवा है क्योकि उन्होनें कविता की मुक्ति के लिए छन्दो की मुक्ति की आवश्यकता को व्यक्त करते हुए परिमल की भूमिका मे लिखा है मनुष्य के मिक्ति की तरह ही कविताकी भी मुक्ति होती है मनुष्य की मुक्ति कर्मो के बन्धन से छुटकारा पाना है । और कविता के मुक्ति छन्दो के शासन से अलग होजाना है । मुक्त काव्य से साहित्य मे एक प्रकारके स्वाधिन चेतना फैलती है जो साहित्य की कल्यान की मुल होती है ।

 निराला ने कविता मे मुक्त छन्द मे प्रयोग की आवश्यकता प्रतिपादित की है । उनकी इस पहल का आलोचक ने मजाक भी उडाया उसे मुक्त छन्दको रबड छन्द या केचवा छन्द भी कहा ।

अब अधिकाश विचारक यह मान्ते है की उन्होने हिन्दी काव्यको मुक्त छन्दो की अमर विभूति प्रदान कर अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया । दिनकर ने भी एस प्रयास की सराहना की है ।

उल्लेखनीय है की मुक्त छन्द सम्बन्धी निराला के विचारो को सम्झे बिना ही उनको आलोचना की है । निराला ने कभी भी छन्द शास्त्रके प्राचिन मर्यादा की विरोध नही की है । वास्तव मे उनकी चेष्टा केवल यही रही है की अनावश्यक छन्द बन्धनके कारण उनके कविता ओ के गति रूक म जाएँ । यही कारण है की उनके मुक्त छन्द मे लिखि गए कविताओ को अनेक स्थान पर छन्दभी मिल्ते है । यैसा एस कारण हुवा है की उनके काव्य मे लय की प्रधानता है । उनके काव्य मे लय और छन्दका गहन सम्बन्ध है ।

स्वंय निराला ने अपने मुक्त छन्द के समंबंध मे कहा है , कि मुक्त काव्य कभी साहित्य के लिए अनर्थकारी नही होता किन्तु उससे साहित्य मे एक प्रकारकी स्वाधिन चेतना फैलति है जो साहित्य की ही कल्याण की मुल होती है ।मुक्त छंद भी अपनी विषय गति मे एक ही साम्य का अपार सौन्दर्य देता है । मुक्त छंद का समर्थक उसका प्रवाह ही है वही उसे छंद सिद्द करता है और उसका नियम साहित्य से उसकी मुक्ति ।एस प्रकार निराल ने मुक्त छंद मे प्रवाहमयता को आवश्यक मानते है । उनके मुक्त छन्द मे लय के साथ साथ गीतिमयताका सफल समावेश हुवा है। उन्होने मुक्त छन्द के क्षेत्रमे अनेक नविन प्रयोग किये है। जूहीकी कली कविता मे उन्होने मुक्त छन्द का प्रयोग किया है।

 मुक्त छन्द् के अतिरिक्त उन्होने तुकान्त कविताए भी लिखी है। उनकी काव्य मे लयात्मकता और प्रवाहमयता हमेशा बनी हुवी है।

 उन्होने हिन्दी काव्य मे छन्द सम्बन्धी नये और क्रान्तिकारी प्रयोग किये है। उन्होने सोनेट, ठुमरी, गजल, कव्वाली और कजली आदि के साथ साथ लोकगीतों के छन्दोको भी अपनाकर सफल काव्य रचाना कि है। निष्कर्ष उपर्युक्त तथ्यो के आधार पर निरालाको हिन्दी मे मुक्त छन्दका पर्वर्तक माना जा सकता है।

**SEC PAPER 1 3rd SEM**

**विज्ञापन लेखन**

विज्ञापन की अवधारणा, उद्देश्य एवम् महत्व

विज्ञापन किसी भी उत्पाद और विचार को अधिक से अधिक लोगो के वीच फैलाने, लोकप्रिय बनाने और उसे बाजार दिलाने का माध्यम है। आज व्यापार का युग है और विज्ञापन व्यापार कि आत्मा। विज्ञापन प्रचार का एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो व्यवसायिक एवम् औद्योगिक क्षेत्रमे उत्पाद की निरन्तरता, माँग, वृद्धि तथा नये उत्पाद को उपभोक्ताओं की रूचि एवं विश्वास पैदा करने मे सहायक होता है।

 विज्ञापन अपने व्यवसायिक प्रतिद्वन्दीको परास्त करने का सबसे विश्वसनीय, कारगर, प्रभावपूर्ण और शक्तिशाली हथियार है।

विज्ञापन अंग्रेजी के एडवरटाइजमेन्ट जो लेटिन भाषा के एडवर्टर से विकसित हुवा है अंग्रेजी मे एड का अर्थ है की ओर और वर्टर का अर्थ है मोडना।उपभोक्ता को दूसरे उत्पाद से अपने उत्पाद की और मोडना ही विज्ञापन है। हिन्दी मे विज्ञापन वि और ज्ञापन दो शब्दो से मिलकर बना है।वि- विशेष, ज्ञापन-ज्ञान कराना- सूचना देना, सार्वजनिक सूचना देना।

 वस्तुतः विज्ञापन उपभोक्ता को विशेष रूप से सूचना या जानकारी देता है।

विज्ञापन उपभोक्ताको सूचना या जानकारी वस्तु, सेवा की गुणवत्ता एवं मूल्य की सूचना देकेर अपनी वस्तु को वाजार मे अधिक से अधिक क्रय करने के लिए प्रोत्साहित् करना विज्ञापनका मुख्य कार्य है।

व्यवसायिक क्षेत्रमे विज्ञापन का मूल लक्ष्य अपने उत्पाद के लिए विशेष वाजार और उपभोक्ताओं की खोज करना और उपभोक्ता के लिए उत्पाद का मूल्य और गुणवत्ता की सूचना देकेर मार्गदर्शक का मांग करता है।

 विज्ञापन को मुद्रण के रूप मे विक्रय कला कहा गया है। यह उस समय की वात है जब रेडियो, टेलिभिजन, मोबाइल, इन्टरनेट का आविष्कार नही हुआ था।

 निष्कर्ष अब हम विज्ञापन को आज के सन्दर्भ मे इसप्रकार परिभाषित कर सकते है- “विज्ञापन उन क्रियाकलापोको समाहित किये हुवे है जिसके द्वारा दृष्टिगत अथवा मैखिक सूचनाओ को आधार बनाकर जनता को सूचित और प्रभावित किया जाता है जिससे वह उत्पादित वस्तु खरिदे अथवा विचारों, व्यक्तिओं, व्यापार चिन्हो या संस्थाओ के प्रति सहमति रखे”

 इसमे उत्पाद के विक्रय, विचारो और नीतिओंका प्रसारण भी समाहित् है।

 राष्ट्रिय विज्ञापन दाता एवं प्रकाशक सूचना संघ विज्ञापन उत्पाद या सेवा की सिधी विक्री से आगे के उद्देश्यपूर्ति हेतु किये गये समवेत वैयक्तिक प्रयासो पर आधारित है।

 विज्ञापन विक्रय कला है। यह शब्दो, दृश्यों, चित्रो, चिन्होका माध्यम है।यह उत्पाद, विचार, अभिमत तथा सेवा के प्रचार प्रसार का साधन है।

 दुसरे शब्दो मे विज्ञापन ऐसा समूल्य प्रयास है जो लिखित अथवा मौखिक शब्दो चिन्हो छवियों ध्वनीओं रंगो मे बंधे विचार और सन्देस को अधिक से अधिक लोगो तक पहुँचाने की कला से परिपूर्ण रहता है। उसकी सफलता इस बात मे निहित है कि वह अधिक से अधिक लोगो को अपने प्रभाव मे ले सकें।

**विज्ञापन के उद्देश्य**

विज्ञापन के उद्देश्य उत्पादकों, निर्यातको के उत्पाद को व्यापक समाज तक पहुँचाने मे सहायता करना है। विज्ञापन का कार्य उपभोक्त्ता समाज की जरूरतो एवं इच्छाओं की पूर्ति मे सामाजिक स्पर्धा जगाना है।

विज्ञापन का उद्देश्य किसी सन्देस या विचार वस्तु को अधिक से अधिक पाठकों, दर्शकों या स्रोताओं तक आकर्षक व तीव्र गति से पहुँचाना है।

विज्ञापन का उद्देश्य सरकार राज्य प्रतिष्ठान या किसी संस्था की रीतिनीति, उद्देश्य विचारधारा,जनता के कल्याण योजनाओं, कार्यो, कार्यक्रमो की सूचना देना भी है।

विज्ञापन एक और उत्पाद की विक्री और दुसरी और पत्रपत्रिकाओं की वृद्धी तथा उनके प्रचार प्रसार को भी बडाता है। वह उत्पाद के गुणो को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। विज्ञापन उत्पाद को उपभोक्ता तक पहुँचाने और पत्रपत्रिकाओं के आय का बडा स्रोत है।

संक्षेप मे विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. नये नये उत्पादों, कार्यक्रमो, विचारो तथा सेवाओं का परिचय देना
2. उपभोक्ताओं के मन मे विज्ञापित वस्तु के प्रति विश्वसनीयता उत्पन्न करना।
3. नये उत्पादो एवं स्वपक्ष के प्रति लक्षित् समूह का ध्यान आर्कषित करना।
4. विक्रय मे वृद्धि करना
5. विज्ञापित वस्तु अथवा सेवा प्रदाता की छवि का निर्माण करना।
6. विज्ञापित वस्तु को अधिक से अधिक क्रय करने के लिए उपभोक्ता को विश्वनीय ढंग से प्रेरित करना।
7. विज्ञापन जनसम्पर्क का सर्वश्रेष्ठ साधान है।
8. विज्ञापन एक अभियान है जो व्यवसायिक क्षेत्र मे किसी उत्पाद की लोकप्रियता बढाते हुवे उसके विक्रय मे तिव्रता लाता है।
9. विज्ञापन का उद्देश्य जनमानस मे अपनी छाप बनाना ब्राण्डनेम स्थापित करना लोकप्रिय होना लम्बे समय तक उपभोक्ता के मन मे बस जाना स्पष्टता सूचना प्रदाता एंव विश्वसनीयता विज्ञापन की आवशयक शर्ते है।

विज्ञापन की उपयोगिता एवम महत्व

आजके बजारवादी युगमे विज्ञामपनका मानव जीवम से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित होगया है ष यही सम्बन्ध विज्ञापनके महत्वको दर्शाता है । विज्ञापनका उपयोग हर क्षेत्रमे हो राहा है । विन्सडन चर्चिल ने विज्ञापनके आर्थिक उपयोगिता स्पष्ट करते हुए कहा है टकसाल के अतिरिक्त कोइ भी बिना विज्ञापनके मुद्रा उत्पन नही कर सकता ।

विज्ञापनका महत्व चार विन्दुओ मे देखा जा सक्ता है

1. विज्ञापन दाताको लाभ
2. उपभोक्ताको लाभ
3. विक्रयकर्ताको लाभ
4. समाज और राष्ट्रको लाभ

1.विज्ञापन दाताको लाभ- विज्ञापन दाता अपने क्षेत्रके अन्य उत्पादक प्रतिस्पर्धाओको पछाडकर आगे बड्ना चाहाता है। विज्ञापन बजारकी अस प्रतियोगितामे विजय होने कि लिए बहुत बडी भूमिका निभाता है । विज्ञापन उपभोकताको प्रभावित कर माग मे वृद्धि करा देता है । जिससे उत्पादनको प्रोत्साहन मिलता है । लोक प्रिय पत्र- पत्रिकाओ मे दिए गए विज्ञापनसे उत्पादककी ख्याति बडती है । विज्ञापन के माध्यम से उत्पादन मे सुधार की सूचनाए भी समय समय पर दि जा सकती है । विज्ञापन मागका सृजनकर्ता है । वह उत्पादनमे वृद्धि की सम्भावना एंवम नए बजारकी सृजन मे वृद्धि करता है ।

2. उपभोगता मे लाभ- उपभोगता विज्ञापनकी माध्यमसे वस्तु अथवा सेवाओ के माध्यमसे जानकारी प्राप्त कर लेता है । वह उनके गुणो एवम विशेषताओको भी परख लेता है । और इनके उपयोगके तरीके भी जान लेता है । विज्ञापित वस्तुओ की सेवाओकी विक्रय केन्द्र की जानकारी भी मिल जाती है । वह उनका तुलनात्मक अध्ययन भी विज्ञापनोकी माध्यमसे आसानी से कर लेता है । उपभोगता सोचं समजकर अपनी जरूरतकी चीजोसे मे से अच्छी चीजका चुनाव करता है । और अपनी धनका सदुपयोद कर पाता है । एक अच्छा विज्ञापन नई नई सुचनाएँ देकर उपभोगताका ज्ञानवर्धन करता है । और उसकी शंकाओका समाधान करता है ।

3. विक्रयकर्ता को लाभ – विज्ञापन के माध्यमसे विक्रयकर्ताओका विक्रय कार्य सरल हो जाता है । विक्रयमे वृद्धि होने से लाभ की मात्रा बढ जाती है । वह वस्तुओ की विक्रि का अनुमान लगाकर उन वस्तुओका आवश्यकता अनुसार अधिक उत्पादन कर सकता है । विज्ञापन द्वारा प्रचार करने से उस वस्तुओ की माँग बढ जाती है । और माग के निरन्तर बने रहने से मूल्यो मे स्थिरता आ जाती है जिससे उनका व्यवसाय तेजी से फलता फूलता है । विज्ञापन समय समय पर मूल्यको भी नियन्त्रित और प्रकाशित करते रहते है । जिससे बजारमे स्वस्थ प्रतियोगिता रहते है । एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बनी रहते है जिससे सभीको समृद्धि का अवसर मिल जाता है ।

4. समाज एवंम राष्ट्रको लाभ- विज्ञापनसे समाज एंवम राष्ट्र भी लाभान्वित होते है । विज्ञापन रोजगार के अवसर सामने लाते है । विज्ञापन बडे विज्ञापन अधिकरणो के अलवा छोटे मोटे कार्य करने वाले संस्थाओं को भी पनपाता है । रोजगार की अतिरिक्त विज्ञापन हमारी जीवन स्थर मे वृद्धि करता है जिससे राष्ट्रके स्थरमे वृद्धि होती है । माग बढनेसे उद्धोग धन्धे बढते है , व्यापार बढता है तथा सकल राष्ट्रीय आय मे वृद्धि होती है इससे राष्ट्र समृध्द एंवम मजबूत होता है । विज्ञापन स्वस्थ प्रतियोगिताका वातावरण बनाता है जिससे समाजका पैसा वस्तुओ अथवा सेवाके उपभोगके बदले पुरी किमतको वसुल कर पाने मे सफलता प्राप्त करता है । विज्ञापन आर्थिक ही नही समाजिक औंर सांस्कृतिक स्तरपर भी महत्वपूर्ण लाते है ।

निष्कर्षत: विज्ञापन व्यक्ति समाज और राष्ट्रकी समन्वित विकासके आधार का काम करते है वे न केवल व्यापार की समृध्दिपर सहायक है वलकी स्वस्थ प्रतिस्पर्धाको जन्म देकर समाज तथा राष्ट्र की उन्नतिमे भी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते है । आज के वैश्विक वातावरणमे कोइ भी देश विश्व स्तरपर केवल विज्ञापनके माध्यमसे ही अपने पहेचान बना पाता है । अत: विज्ञापन व्यक्ति समाज राष्ट्र औंर विश्व स्तर पर आर्थिक प्रकृया एवं सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तनका महत्वपूर्ण घटक है ।

GE PAPER 2

2ND SEMESTER

स्वच्छन्दवाद

पाश्चात्य साहित्य विवेचन मे स्वच्छन्दवाद( ROMANTICISIM)प्राय: अभिजात्य वाद के परिपेक्ष्यमे रख कर उसकी विरोधी प्रवृतिके रूपमे देखा जाता है ।

स्वच्छन्दतावाद आत्मपरकता एवं रचनाकार की स्वतन्त्रता के अधिकारका दावा करता है । यह अङ्ग्रेजी आलोचना मे अठारहवी शदीके अन्तमे उभरी विशिष्ट प्रवृति है जो मुख्य रूपसे कविता के क्षेत्रमे प्रतिफलित हुइ किन्तु जिसने साहित्य तथा कला के अन्य क्षेत्र पर भी गहरा प्रभाव छोडा ।

यह सामान्यत अतिभावुक कल्पना प्रधान मनोवृतिके लिए प्रयुक्त होता है । जिसके लिए कुछ भी अस्मभाव्य नही है । कुछ लोग इसका प्रयोग मध्यकालकी प्रेम कथा तथा लोक गाथाओके लिए करते है । आगे चलकर रोमान्स शब्दका प्रयोग उस प्रवृति के लिए होने लगा जो वस्तुवादी शास्त्रवादी तथा आदर्शवादी अनुशासनसे प्रेरित गद्धात्मक साहित्यके विरूद्ध वस्तु तथा भाषाके स्तर पर भावुकता , चारूत्व तथा रमणीयता से साहित्यकी पक्षधर है । अङ्ग्रेजी साहित्य इतिहासकार एमिल लेगुइ तथा लुई केजामिया ने इसे परम्परावादी कला के विरूद्ध नवोन्मेषकारी सौन्दर्यशास्त्रीय सिद्धान्त कहा है ।

हिन्दी मे इसके लिए स्वच्छन्दतावाद शब्दका प्रयोग किया जाता है ।

परिभाषिक तौर पर इस शब्दका प्रयोग सबसे पहले 1669 इस्वीमे फ्रान्समे कला चिन्तन के सन्दर्भने आया अंग्रेजीमे यह शब्द 17वी सदीमे आया जर्मनीके स्लेगल ने क्लासिसिजम के विपरित प्रवृति के रूपमे इसका अर्थ निर्धारण किया अंग्रेजीमे वड्सवर्थ, कलरिज, शेली कीट्स इस प्रवृतिके प्रख्यात कवि थे पर उन्होने इस शब्दका प्रयोग नही किया ।

पृष्ठभूमि- आज स्वच्छन्दवादका प्रयोग मूलत अंग्रेजी साहित्य की उस प्रवृतिके लिए होता है जो अठारवी शदीके अन्तमे मुखर हुई । इसमे रचनाकारोने साहित्य रूढिओ को तोड्ने और वैयक्तिक भावान्मेष को वाणी देने की जो चेष्टा की उससे स्पष्ट है कि वे सम्पूर्ण भावसे एक निश्चित उद्धेश्य सामने रखकर इस प्रवृतिको अपना रहे थे । इसके पीछे मात्र साहित्य शास्त्रीय नही बल्कि सामाजिक और राजनीतिक कारण भी थे । साहित्यकी नव्य अभिजात वादी दृष्टि रूढ हो गयी थी । साहित्य आडम्वर पूर्ण हो गया था वह अपनी युगकी आवश्यकताओ की अभिव्यक्तिमे असमर्थ हो गया था । इस स्थितिके विरोध मे विलियम वेल्स (1757-1827) और रव्रट वर्न्स (1759-1796) जैसे कवियो की रचनाओ मे धीरे धीरे स्पष्ट हो रहे थे । 1798 मे विलियम वड्सवर्थ तथा कलरिज के सहयोगी संकलन लिरिकल वैलेडस के प्रकाशन से स्वच्छन्दतावादी प्रवृति सामने आयी । इससे तार्किकता के विरूध भावुकताका विद्रोह कहा गया ।

स्वच्छन्दतावाद पर जर्मन रोमान्टिक साहित्य तथा आत्मवादी दर्शन का प्रभाव पढा ।

जर्मनीके रोमान्टिक साहित्य तथा अतिप्राकृतिक तत्वके प्रति रूझान तथा विश्वकी सीमाओ को तोडकर आगे बढने वाले अन्वेषण वृति मे अंग्रेजीके रचनाकारोकने प्रभावित किया । अठारवी शदीके जर्मन दार्शनीक हेगेल और शिलर के आत्मवादी दर्शन तथा भाव वादसे प्रेरित सूक्ष्म अति इन्द्रिय तत्व तथा सुन्दरता के प्रति स्वच्छन्दतावादमे प्रबल आकर्षण का भाव देखा । स्वच्छन्दवादी कला की प्रकियाको जड से चेतनकी अमूर्त, सार्वभौम, विशुद्ध, परमचेतना मानते है ।

फ्रान्सकी राज्य क्रान्ति स्वच्छन्दतावादी फ्रान्सके राज्य क्रान्ति स्वच्छन्दवादी भावना पर प्रभाव पढा। सन् 1789 मे हुई क्रान्ति के पहले से इसके लिए वातावारण तैयार होरहाथा । रूसो के लेखनमे स्वच्छन्दतावादी रचनाकारो को बौद्धिक, सैदान्तिक और भावनात्मक स्तर पर प्रभावित किया । पारम्परिक शास्त्रवद्ध नियमो को नकार दिया । मौलिकता नवीनता और सृजनात्मकता पर बल दिया । मनुष्य मात्र के महत्व तथा गरिमा को स्वीकार और स्वतन्त्रताके साथ भातृत्वकी भावना को स्वीकार किया ।

इंगलैण्ड के औधोगिक क्रान्तिने शान्ति, सौम्यता और सुरूचिके मूल्यो पर आघात किया इस वातावरण की घुटनसे त्रस्त संवेदनशील साहित्यकारो ने प्रकृतिके सुरम्य गोदमे आश्रय ढूढा । वे स्वस्थ सुरूचिपूर्ण साहित्य के रूपमे एक विकल्प रखना चाहते थे।

 इस प्रकारके बहुत सी तत्कालीन घटनाएँ थी जिन्होने समयके उस विन्दु पर स्वच्छन्दवादी प्रवृतिके उभार के लिए भूमि तैयार की ।

 **प्रमुख प्रवृतियाँ**

स्वच्छन्दतावादकी प्रवृति या विशेषताओ की चर्चा मुख्य रूपसे वड्सवर्थ, कलरिज, बाइरन, शेली, किट्स आदिके काव्य , सर वाल्टर स्काँट के उपन्यासओं लैब, हैजलिट, लैंन्डर आदिके ललित निबन्धो तथा अन्य गद्ध रचनामे भी स्वच्छन्दतावादी विचार धारा अपने ढंगसे अभिव्यक्त हुई है । स्वच्छन्दतावादी साहित्य प्रवृतियाँ इन सभी रचनाओ के अध्ययन से ही स्पष्ट होती है । स्वच्छन्दतावादका तमाम विशेषताएँ सारे रचनाकारो मे स्वच्छन्दतावादको तार्किकता के विरूध भावका विद्रोह कहा गया है । इससे इसकी दो विशेषताएँ स्पष्ट होती है विद्रोह तथा भावप्रवणता । विद्रोह इस विचारधाराका मूल आधार है । जिसकी प्रेरणा फ्रान्सिसी क्रान्ति रही है । साहित्यमे यह विद्रोह जडता , रूढिओं तथा अप्रासांगिक लेखन परम्परा से लेखक की मुक्ति के प्रयास मे दिखाई देता है । रोमान्टिसिजम मे यह साहित्य के अन्तरवस्तु तथा रूप दोनो स्तर पर दिखता है । स्वच्छन्दातावादी रचानाकारो ने उदात्त चरित्रो की गाथा के स्थानपर साधारण मानवके सामान्य अनुभव तथा अपने परिवेश तथा प्रकृति के सहज सामान्य रूपो को अंकित किया । स्वच्छन्दतावाद स्वभाविकता और सहजता की प्रतिष्ठा करती है ।

शैली और शिल्प स्तर पर भी इन रचनाकारो मै वैविध्य रहा है । वस्तुत: यह वैविध्य तथा प्रयोगशीलता भी व्यक्ति स्वातन्त्र के कारण है । स्वच्छन्दतावादी रचनाकारों की भाषा मे सहज सामान्यता के प्रति रूझान है । इनकी भाषा विषय के अनुरूप तथा भाव समृद्ध एवं पाठको से आत्मीय संवाद उपस्थित करती है ।

भावप्रवणता स्वच्छन्दतावादी साहित्य की प्रमुख विशेषता है । जो आत्मअभिव्यक्ति के साथ साथ सहानुभूति और समानुभूति भी देती थी ।

स्वच्छन्दतावाद मे कल्पना को अधिक महत्व मिला। इसे काव्यकी विधायिनी शक्ति के रूप मे देखा गया । जो स्थूलवादी जगत के अन्दर स्थित सुक्ष्म भाव जगत को समझने मे रचनाकार की सहायता करती है । कल्पना की नवोन्मेषशालिनी क्षमता के बल पर ही कवि सामान्य तथा स्थूल वस्तु के साक्षात्कार से भी एक अति इन्द्रीय , अमूर्त, रहस्यमय लोक में या किसी नैतिक और दार्शनिक सत्य तक पहुँच जाता है । कल्पना ने इस युगकी रचना में भाषा तथा भाव के सौन्दर्य का आधान किया किन्तु कही कही यह जीवन जगत के दुखो से हारे मन के पलायन का माध्यम भी बनी । स्वच्छन्दतावादी साहित्य मे मध्य युगके रोमान्स कथाओं के प्रति आकर्षण भी मिलता है । कल्पनाका सहारा लेकर उन्होने उस युग की चित्रमयता तथा रोमानको सजीव किया ।

कलिरज तथा किट्सकी कविता और स्काँट के उपन्यासो मे मध्ययुगका यह प्रभाव सबसे अधिक दिखाई पडता है ।

स्वच्छन्दतावाद अद्भूत तत्वके प्रति आकर्षित होता है जिससे इस साहित्यमे अति मानवीय अलौकिंक तत्वों की चर्चा दिखाई पढती है । कौतुहल विस्मय तथा रहस्य इसी कारण इन रचानाओं मे मिलता है । जिससे यह जीवन सन्दर्भो तथा वस्तुओ को नई दृष्टि से देखते है ।

भावप्रणता एवंम मन की इस प्रवृति के कारण ही स्वच्छन्दतावादी साहित्य ने वैयक्तिता तथा आत्मपरकता को एक मूल्य के रूपमे स्वीकार किया । स्वानुभूति को महत्वपूर्ण भूमिका मिला। रचनाकारोंने अपने सुखदुख भी कविता तथा निबन्ध के विषय बनाएँ । इसी कारण इस युग के साहित्य मे भावाकुलता के साथ साथ विषाद का भाव भी मिलता है जो समाज तथा स्थितियों के सघर्ष के क्रम मे संवेदनशील व्यक्ति की स्वभाविक प्रतिक्रिया है ।

रूसो के जनस्वतन्त्रता के आवह्न से ये कवि गहरे प्रेरित थे । ये व्यक्ति और कवि की स्वतन्त्रता को रचना कर्म के लिए अनिवार्य मानते है । कथ्य और शिल्प दोनो ही स्तरो पर उसे नये मौलिक प्रयोग की छूट होनी चाहिए । वड्सवर्थ ने लिरिकल वैलेडस की आमुख मे स्पष्ट रूप से प्रयोग कहा है ।

स्वच्छन्दतावाद मे सौन्दर्यको अधिक महत्व दिया गया । सौदर्य को ही सत्य तथा सुन्दर को अभिन्न मानते है। यह दृष्टि वाह्यजगत् , प्रकृति तथा कविता मे भी वाह्य और आन्तरिक सौन्दर्य पर बल देती है । सौन्दर्य प्रेम तथा सौन्दर्य जिज्ञासा कों पेन्टर ने स्वच्छन्दतावादी चेतना का मूल तत्व माना है ।

स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार प्रकृति के प्रति आकर्षण अनेक रूपो मे अभिव्यक्त करते है । वे सहज प्राकृतिक सौन्दर्य के पक्षधर है । औद्योगिक सभ्यता के विकृतियों तथा घुटन से व्याकुल संवेदनशील साहित्यकारो के लिए प्रकृति एक शरण स्थली थे । प्रकृति इनके लिए प्रेरणा दायक तत्व थी । प्रकृति के साथ स्वच्छन्दतावादी रचनाकारो का सम्बन्ध रहस्यवाद तक पहुँचता है। इसके माध्यमसे वे अपने अन्तर जगत की पहचान करते है या चरम सत्ता का साक्षात्कार करते है । प्रकृति मे ये अपने भावों का प्रतिविम्ब देखते है और इसके रूपो तथा विम्बो के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को समृद्ध करते है ।

ये सरल स्वभाविकता के पक्षधर, भाव, भाषा तथा शिल्प सभी स्तरों पर थे । इन कवियो ने भाषा और ध्वनि के संगीत का सुन्दर उपयोग किया है । ये सूक्ष्म व्यञ्जना और सांकेतिकता पर बल देते थे ।

शास्त्रीयता के संधे बधें अनुशासित तुकान्त हीरोयिक कप्लेट के स्थान पर इन्होने कोमल , मधुर गीत ( लिरिक) या फिर मुक्त छन्द को अपनाया। इन छन्दो का प्रयोग इन्होने अपने ढंग और मिजाज से किया ।

**स्वच्छन्दतावाद का अन्त**

स्वच्छन्दवाद मे साहित्य को कई चिन्तन पूर्ण तथा रमणीय कृतियों से समृद्ध किया पर अन्त मे यह भी अतिवाद का शिकार हो गयी । वैयक्तिकता और आत्मपरकता के कारण यह वस्तु जगत से क्रमश: दूर होती गयी मनोभावो का सहज उच्छलन मानने के कारण स्वच्छन्दतावादी रचनाएँ किसी नियन्त्रण, संशोधन के अभाव मे कई बार भावात्मक प्रलाप बनकर रह गई ।

आरम्भ मे स्वच्छन्दतावादी रचनाकार परिवेश से विमूख नही थे पर वाद मे यह जुडाव घटने लगा। आत्मपरकता आत्मकेन्द्रिता मे बदलने लगी। यह समाज विमूखता स्वच्छन्दतावाद के अन्त का कारण बनी और यह विचार धारा संतुलन , नियन्त्रण समन्वय साम्थर्य, शालीनता, शान्ति ,सह्रदयता आदि के अभाव मे अप्रसांगिक होने लगी और उन्नीसवी सदी मे इस के विरोध मे नव्य अभिजात्यवादी विचारधारा का अविर्भाव हुआ ।